रचनात्मक आकलन : एक विहंगावलोकन

रचनात्मक आकलन एक ऐसा उपकरण है जिसे भयमुक्त और सहयोगपूर्ण वातावरण में शिक्षार्थियों की प्रगति की नियमित जांच के लिए शिक्षक द्वारा उपयोग में लाया जाता है। इसमें नियमित वर्णनात्मक प्रतिपुष्टि, शिक्षार्थी द्वारा अपने निष्पादन पर मनन करने का एक अवसर, सलाह लेना और उसमें सुधार करना शामिल है। इसमें आकलन के मानदंडों का निर्माण करने से लेकर स्व-आकलन अथवा सहपाठियों का आकलन करने तक शिक्षार्थी आकलन के एक अनिवार्य हिस्से के रूप में शामिल रहते हैं। यदि इसका प्रभावी तरीके से प्रयोग किया जाए तो यह बच्चे की स्व-गरिमा को बढ़ाते हुए और शिक्षक के कार्य-भार को कम करते हुए शिक्षार्थियों के निष्पादन में सुधार कर सकता है।

क्या है रचनात्मक आकलन ?

रचनात्मक आकलन को इस रूप में परिभाषित किया जाता है – "यह शिक्षार्थियों को जानकारी संप्रेषित करता है जिसकी मूल भावना है – सीखने में सुधार करने के उद्देश्य से उनके चिंतन अथवा व्यवहार को परिमार्जित करना।" (शूट, 2008, पृ. 154) यह प्रतिपुष्टि की पक्रिया का एक हिस्सा है जिसमें शिक्षार्थी प्राप्त जानकारी के आलोक में अपनी प्रतिक्रियाओं का मूल्यांकन करता है और समायोजन करता है। इसका उपयोग इनके लिए किया जा सकता है –

क) ज्ञान में रिक्तियों की पहचान करना

ख) महत्वपूर्ण जानकारी की पहचान के लिए नए शिक्षार्थियों की मदद करना

ग) कार्यविधि संबंधी त्रुटियों अथवा भ्रांतियों को दूर करना

शिक्षक और शिक्षार्थियों दोनों को अनुदेशन के दौरान निरंतर प्रतिपुष्टि उपलब्ध कराने के लिए रचनात्मक आकलन किया जाता है। शिक्षण-पद्धतियों और सीखने संबंधी कार्यकलापों में समुचित संशोधन करने संबंधी निर्णय लेने के लिए भी रचनात्मक आकलन किया जाता है।

- '... अकसर इसका अर्थ इतना ही है कि आकलन अनेक बार किया जाता है और इसकी आयोजना शिक्षण के समय ही की जाती है।' (ब्लैक एँड विलियम,1999)
- '... प्रतिपुष्टि प्रदान करता है जिससे शिक्षार्थियों में (सीखने संबंधी) रिक्तियों को पहचानने और इन्हें दूर करने में मदद मिलती है ...यह आगे की ओर देखता है।' (हारलेन,1998)

- '... इसमें प्रतिपुष्टि और स्व-निगरानी दोनों शामिल हैं।' (सैडलर,1989)
- '... अनिवार्यत: इसका उपयोग शिक्षण और अधिगम-पक्रिया की प्रतिपुष्टि के लिए किया जाता है।' (टूंसटल और गिप्स,1996)

रचनात्मक आकलन की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं -

- यह निदानात्मक और उपचारात्मक होता है।
- यह प्रभावी प्रतिपुष्टि उपलब्ध कराता है।
- यह शिक्षार्थियों को उनके स्वयं के सीखने में सक्रिय भागीदारिता के लिए मंच उपलब्ध कराता है।
- यह आकलन के परिणामों को देखने के लिए शिक्षकों के शिक्षण को अनुकूल बनाने में मदद करता है।
- यह अभिप्रेरणा और शिक्षार्थियों की आत्म-गरिमा जिनका सीखने पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है - पर आकलन के गहन प्रभाव का पता लगाता है।
- शिक्षार्थियों को अपना आकलन करने की क्षमता की आवश्यकता को पहचानने और उसमें सुधार करने में मदद करता है।
- जो पढ़ाया गया है, उसकी संरचना शिक्षार्थियों के पूर्व ज्ञान और अनुभवों पर आधारित होती है।
- यह निर्धारित करने में कि क्या और कैसे पढ़ाना है - विविध अधिगम शैलियों को शामिल करता है।
- शिक्षार्थियों को वे मानदंड समझने के लिए प्रोत्साहित करता है जिन्हें उनके कार्य की जांच करने के लिए उपयोग में लाया जाएगा।
- यह शिक्षार्थियों को प्रतिपुष्टि मिलने के बाद अपने कार्य में सुधार करने का अवसर प्रदान करता है।
- यह शिक्षार्थियों को अपने सहपाठियों की मदद करने और उनसे मदद लेने में सहयोग करता है।

रचनात्मक आकलन क्यों उपलब्ध कराया जाए?

"...रचनात्मक आकलन शिक्षार्थियों के सीखने में काफी महत्वपूर्ण है। वे क्या करते हैं - इसके बारे में जानकारीपरक प्रतिपुष्टि के बिना उन्हें अपेक्षाकृत काफी कम अवसर मिलता है जिसके द्वारा वे अपने विकास को देख पाएँ।"

- सीखने के लिए अभिप्रेरणा को बढ़ावा देता है।
- ज्ञान में आई रिक्तियों की पहचान करने में शिक्षार्थियों की मदद करता है।
- स्वाध्याय को संवृद्ध करता है।
- वांछित परिणामों को स्पष्ट करता है।
- विशिष्ट भ्रांतियों का निदान करता है।

संक्षेप में, रचनात्मक आकलन शिक्षार्थियों को यह सामंजस्य बिठाने की स्वीकृति देता है कि वे क्या और कैसे सीख रहे हैं। प्रतिपुष्टि का उपयोग यह सामंजस्य बिठाने के लिए भी किया जा सकता है कि आप क्या और कैसे पढ़ाते हैं।

रचनात्मक आकलन...

- सीखने की प्रक्रिया का अंग है।
- सीखने में सुधार करने के लिए उपयोग में लाया जाता है।
- शिक्षार्थियों की आंतरिक अभिप्रेरणा को बढ़ाता है।
- शिक्षण में सुधार करने के लिए उपयोग में लाया जाता है।

रचनात्मक आकलन प्रतिपुष्टि है!

'प्रतिपुष्टि के बिना सीखना एक प्रकार से अंधेरे कमरे में तीर चलाना सीखना है। *(क्रॉस, 1998)*

1. स्पष्ट करता है कि बेहतर निष्पादन क्या है।
2. सीखने में स्व-आकलन(मनन) को सुगम बनाता है।
3. शिक्षार्थियों को उनके सीखने के बारे में उच्च स्तरीय जानकारी देता है।
4. सीखने के बारे में शिक्षक और सहपाठियों के संवाद को प्रोत्साहित करता है।
5. सकारात्मक अभिप्रेरणात्मक विश्वास और आत्म-गरिमा को प्रोत्साहित करता है।
6. वर्तमान और वांछित निष्पादन के बीच के अंतर को समाप्त करने के अवसर उपलब्ध कराता है।
7. शिक्षण में सुधार के लिए शिक्षकों को जानकारी उपलब्ध कराता है।

रचनात्मक आकलन योजना

रचनात्मक आकलन पर बल

↓

शिक्षार्थियों के साथ अधिगम-परिणामों और वांछित अपेक्षाओं की साझेदार

↓

स्पष्टतः परिभाषित मानदंड

↓

उदाहरण और दृष्टांत का उपयोग

↓

विशिष्ट प्रतिपुष्टि देना (जो मदद करेगी)

↓

शिक्षार्थी के स्व-आकलन को शामिल करने में

↓

शिक्षार्थी अपनी प्रगति का रिकॉर्ड रखते हैं

↓

शिक्षक शिक्षार्थियों की प्रगति का रिकॉर्ड रखते हैं।

रचनात्मक आकलन के लिए विशिष्ट अनुशंसाएँ

रचनात्मक आकलन के उद्देश्य को पूरा करने और शिक्षार्थियों को अपने निष्पादन में सुधार करने के योग्य बनाने के लिए शिक्षक को अपने शिक्षण-कार्य के दौरान विविध आकलन-उपकरणों का उपयोग करने की आवश्यकता होती है। यह अनिवार्य है कि शिक्षक प्रत्येक सत्र के दौरान कम से कम तीन से चार आकलन उपकरणों का प्रयोग करें। शिक्षक एक रचनात्मक आकलन में एक लिखित आकलन और दो कार्यकलापों (एक समूह कार्यकलाप और एक व्यक्तिगत कार्यकलाप) का प्रयोग कर सकते हैं। सहयोगी अधिगम को बढ़ावा देने के लिए दो कार्यकलापों में से एक कार्यकलाप सामूहिक कार्यकलाप होना चाहिए शिक्षक को प्रत्येक सत्र के दौरान अपने शिक्षकों को एक सामूहिक परियोजना कार्य देना चाहिए ।

रचनात्मक आकलन के अवयव

प्रत्येक रचनात्मक आकलन में शामिल होना चाहिए –

1. **एक व्यक्तिगत कार्यकलाप** मौखिक/लिखित

   (कार्यपत्रक, वाद–विवाद **आदि**)

2. **एक सामूहिक कार्यकलाप (परियोजना, 'रोल प्ले', समूह–चर्चा, सर्वेक्षण आदि)**

3. **लिखित आकलन**

   - गतिविधियों में प्रश्नोत्तरी, वाद–विवाद, परियोजना, रंगमंच आदि जैसी विविध गतिविधियों को शामिल करना चाहिए।
   - कार्यकलाप में प्रति आकलन एक सामूहिक कार्यकलाप को शामिल करना चाहिए।
   - प्रत्येक सत्र में शिक्षार्थियों को एक बहु–विषयक/अंत:अंतर्विषयक सामूहिक परियोजना को शामिल करना चाहिए।
   - आकलन के उद्देश्य के लिए एक व्यक्तिगत कार्यकलाप और एक सामूहिक कार्यकलाप के सर्वश्रेष्ठ अंकों को लिया जाना चाहिए।
   - अंतिम रचनात्मक आकलन की गणना सर्वश्रेष्ठ अंक (एक व्यक्तिगत कार्यकलाप अथवा एक सामूहिक कार्यकलाप) और लिखित आकलन के अंकों के औसत के रूप में की जानी चाहिए।

आकलन के बहु साधनों, जैसे – दत्त कार्य, प्रश्नोत्तरी, वाद–विवाद, सामूहिक चर्चा, परियोजना आदि के माध्यम से रचनात्मक आकलन किया जाना चाहिए यह बिंदु सभी शिक्षकों तक संप्रेषित किया जाना चाहिए कि सामूहिक कार्यकलाप के रूप में परियोजना कार्य और दत्त कार्य कक्षा में और विद्यालय–समय में ही किए जाने चाहिए रचनात्मक आकलन के अंतर्गत प्रत्येक विषय में केवल एक पेपर–पेंसिल परीक्षा होनी चाहिए आकलन के अन्य तरीके कक्षाकक्षीय अंत:क्रियात्मक कार्यकलापों का हिस्सा होने चाहिए।

विभिन्न विषयों के लिए सुझाव के रूप में कार्यकलापों की सूची नीचे दी गई है। यह सूची पूर्ण नही है, यह केवल संभावित विविधता का अंदाज़ा देने के लिए है –

भाषा

- मौखिक और सुनना – ये श्रवण अवबोधन, भाषण तैयार करना, बातचीत अथवा संवाद हो सकते हैं।

- लिखित दत्त कार्य – लघु और दीर्घ उत्तर वाले प्रश्न, सृजनात्मक लेखन, प्रतिवेदन (रिपोर्ट), समाचार-पत्र में लेख, डायरी लिखना, कविताएँ आदि।
- भाषण – वाद-विवाद, वक्तृत्व कला, पाठ, आशु भाषण आदि।
- शोध-परियोजनाएँ – जानकारी एकत्र करना, निगमनात्मक तर्कणा,
- विश्लेषण और संश्लेषण एवं सूचना तथा संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के उपयोग को शामिल करते हुए विभिन्न प्रकारों का प्रयोग करते हुए प्रस्तुति।
- युग्म-कार्य/ सामूहिक कार्य
- सहपाठियों द्वारा आकलन
- पीएसए – भाषा-परम्परा

भाषा में यह सुझाव दिया जाता है कि वार्तालाप के कौशल का आकलन करने के लिए कम से कम कुछ आकलन अवश्य होने चाहिए।

गणित

- समस्या-समाधान, बहुविकल्पी प्रश्न
- आंकड़ा प्रबंधन और विश्लेषण
- जांच-पड़तालपरक परियोजनाएँ
- गणित प्रयोगशाला के कार्यकलाप
- ऑरिगेमी को शामिल करते हुए मॉडल्स
- शोध परियोजनाएँ और प्रस्तुति
- सामूहिक परियोजना कार्य
- सहपाठियों द्वारा आकलन
- सूचना तथा संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के उपयोग को शामिल करते हुए प्रस्तुतियां।
- पीएसए – मात्रात्मक तर्कणा

गणित के लिए यह सुझाव है कि कम से कम कुछ रचनात्मक आकलन कार्य गणित प्रयोगशाला–कार्यकलापों पर आधारित होने चाहिए।

विज्ञान

- लिखित दत्त कार्य, बहुविकल्पी प्रश्न–'एमसीक्यूज़'
- प्रयोगात्मक कार्य जिसमें एक या एक से अधिक स्थिति वाले प्रयोग शामिल हो सकते हैं, अवलोकन करना, आंकड़ा प्रबंधन, निगमन करना (मेकिंग डिडक्शन), सुरक्षित रूप से कार्य करना।
- आंकड़े प्राप्त करने के लिए अथवा गुणों की पड़ताल, नियमों, तथ्यों आदि के लिए योजना या रूपरेखा बनाना।
- शोध कार्य जिसमें जाँच करना अथवा सूचना एकत्रित करना और तार्किक अनुमान शामिल हो।
- समूह कार्य– शोध अथवा प्रयोगात्मक
- संदर्भगत शोध परियोजनाएँ
- सहपाठियों द्वारा आकलन करना
- सूचना और संचार तकनीक का प्रयोग करते हुए प्रस्तुति करना
- विज्ञान–प्रश्नोत्तरी
- संगोष्ठी
- सिंपोज़ियम
- क्षेत्र भ्रमण
- वर्ग प्रतिक्रिया
- मॉडल बनाना
- पीएसए – गुणात्मक तर्कणा

विज्ञान के लिए यह सुझाव दिया जाता है कि कम से कम कुछ रचनात्मक आकलन प्रयोग और हस्तपरक गतिविधियों पर आधारित होने चाहिए।

सामाजिक विज्ञान

- लिखित दत्त कार्य – लघु और दीर्घ उत्तर वाले
- कमेंटरी
- स्रोत–आधारित विश्लेषण
- परियोजनाएँ – जांच–पड़तालपरक, जानकारीपरक, निगमनात्मक और विश्लेषणात्मक
- शोध
- समूह कार्य – परियोजनाएँ और प्रस्तुति
- मॉडल्स और चार्ट्स
- सूचना और संचार तकनीक का प्रयोग करते हुए प्रस्तुति करना
- प्रामाणिक स्रोतों और प्राथमिक पाठ्य–वस्तु का प्रयोग
- खुली–पुस्तक परीक्षा
- गौण स्रोत
- तुलना और अंतर
- पीएसए – गुणात्मक तर्कणा

सामाजिक विज्ञान में यह सुझाव दिया जाता है कि कम से कम कुछ आकलन परियोजनाओं पर आधारित होने चाहिए जो शिक्षक के प्रत्यक्ष पर्यवेक्षण में कक्षागत कार्यकलापों के रूप में समूह में की जानी चाहिए।

> 'एक ऐसी शिक्षा एवं परीक्षा पद्धति आज की ज़रूरत है जो उन अलाभान्वित वर्ग के लोगों में समस्या निराकरण एवं विश्लेषण क्षमता का विकास करे, जो कि रोज़गार उन्मुख बाज़ार के लिए आवश्यक है। पाठ्यपुस्तक को रटना एवं रटे हुए को उगलना, रोजगार उन्मुख बाज़ार के लिए आवश्यक दक्षता नहीं है। इस प्रकार की शिक्षा को बढ़ावा देने वाली परीक्षा पद्धति, रचनात्मकता को समाप्त कर देती है। कौशलों के शिक्षण और उत्कृष्टता की रचना का संभवतः एक ही चिरस्थायी तरीका है – पठन–समता की ओर।'
>
> परीक्षा सुधार, एनसीएफ 2005, एनसीईआरटी

रचनात्मक आकलन के बारे में मिथक

1. **"रचनात्मक आकलन की गिनती नहीं होती।"**

   हो सकता है! रचनात्मक आकलन करते समय ग्रेडिंग नहीं होनी चाहिए, लेकिन शिक्षक के पास ग्रेड के अंग के रूप में रचनात्मक आकलन में शामिल करने के लिए राय या विचार होता है जिन्हें शिक्षार्थी इकाई अथवा कोर्स में अपने अंतिम ग्रेड में जोड़ सकते हैं।

2. **"शिक्षार्थी के सीखने अथवा उपलब्धि पर रचनात्मक आकलन का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।"**

   इसका प्रभाव पड़ता है। अध्ययन बताते हैं कि रचनात्मक आकलन को सुदृढ़ करने से सार्थक अधिगम परिणाम प्राप्त होते हैं। साथ ही रचनात्मक आकलन शिक्षार्थियों को अपने अधिगम की निगरानी में मदद करने के माध्यम से आजीवन अधिगम कौशलों को संवृद्ध करता है। (ब्लैक एँड विलियम, 1998, निकोल एँड मैकफारलेन-डिक, 2006)

3. **रचनात्मक आकलन अधिक शिक्षण-समय और श्रम लेता है।**

   यह ज़रूरी नहीं है। रचनात्मक आकलन की तकनीकें अकसर केवल बेहतर शिक्षण तकनीकें हैं। उदाहरण के लिए इसमें शामिल हैं - नियोजित प्रश्न-उत्तर सत्र, संकेतों के माध्यम से शिक्षार्थियों के उत्तरों का अंदाज़ा लगाना अथवा कक्षागत सत्रों से जोड़ते हुए 'ऑन-लाइन मॉड्यूल्स' और स्वाध्याय प्रश्नोत्तर उपलब्ध कराना।

4. **रचनात्मक आकलन = बहुविकल्पी परीक्षाएँ**

   वास्तव में बहुविकल्पी मद या प्रश्न रचनात्मक आकलन के लिए आधार रच सकते हैं। फिर भी, शिक्षार्थियों को स्व-संशोधन और स्वाध्याय के अवसर उपलब्ध कराना रचनात्मक आकलन का एक महत्वपूर्ण अवयव है। अत: 'परीक्षा देना' परीक्षा में हिस्सा लेने जितना अनिवार्य है।

5. **शिक्षार्थी रचनात्मक आकलन से सहमत होंगे।**

   सीखने की अभिप्रेरणा तब वास्तव में बढ़ जाती है जब वे यह देखते हैं कि जो वे सोचते हैं, जो वे जानते हैं और वे वस्तुत: क्या जानते हैं - इनमें अंतर है। इसलिए रचनात्मक परीक्षण से प्राप्त प्रतिपुष्टि सीखने में संवर्धन कर सकती है। (परीक्षण बहुत अधिक बार नहीं होना चाहिए)(इवर्ज़न एवं सहयोगी, 1994, बेंगर्ट डॉन्स एवं सहयोगी, 2005)।

6. **जितना अधिक रचनात्मक आकलन उतना अधिक बेहतर सीखना**

सही उपकरण और तकनीक के साथ कुछ रचनात्मक आकलन बच्चे की इस रूप में सहायता कर सकते हैं कि वे अपने निष्पादन में सुधार कर सकें।

7. **प्रत्येक रचनात्मक आकलन के दस्तावेज़ीकरण और रिकॉर्ड करने की आवश्यकता है।**

यह अनिवार्य नहीं है कि रचनात्मक आकलन केवल सुधार करने में बच्चे की मदद के लिए है।

विभिन्न पद्धतियों का प्रयोग करने के कारण

1. विकास के विभिन्न विषय-क्षेत्रों में अधिगम होता है और विकास के विभिन्न पक्षों का आकलन किया जाना है।
2. हो सकता है कि शिक्षार्थी एक पद्धति की तुलना में दूसरी पद्धति में अपेक्षाकृत बेहतर प्रतिक्रिया कर सकते हैं।
3. शिक्षार्थी के सीखने के बारे में शिक्षकों की समझ बनाने में प्रत्येक पद्धति अपने तरीके से योगदान देती है।

अपने निष्पादन-स्तर में सुधार करने के लिए शिक्षार्थी की मदद करने के लिए विद्यालय शैक्षणिक सत्र के बिल्कुल प्रारंभ से ही रचनात्मक आकलन के माध्यम से उनकी सीखने संबंधी कठिनाइयों का निदान करेंगे और समुचित समय के अंतराल पर अभिभावकों को इसके बारे में बताएँगे। वे शिक्षार्थियों की अधिगम क्षमता को संवर्धित करने के लिए उचित उपचारात्मक उपाय सुझाएँगे। इसी प्रकार अतिरिक्त दत्त कार्य देकर, समृद्ध सामग्री और परामर्श उपलब्ध कराकर प्रतिभाशाली बच्चों को भी और अधिक पुनर्बलन उपलब्ध कराना चाहिए आवश्यक परामर्श और विभिन्न प्रकार के शिक्षार्थियों को संबोधित करने के लिए कक्षा की समय-सारिणी में आवश्यक प्रावधान करने चाहिए शिक्षकों के लिए यह आवश्यक है कि वे अपनी कक्षा के भिन्न तरीके से सक्षम शिक्षार्थियों के लिए रणनीतियों को शामिल करना चाहिए।

कक्षा-अध्यापिका अथवा विषय-अध्यापिका द्वारा व्यवस्थित रूप से रखे जाने वाले कथा-वृत्तांत- अभिलेखों पर आधारित रिकॉर्ड किए गए साक्ष्यों पर रचनात्मक आकलन किया जाना चाहिए।

यह उचित होगा कि शैक्षणिक सत्र के दौरान शिक्षार्थियों और अभिभावकों को संप्राप्ति-स्तर के बारे में बताया जाए जिससे शिक्षार्थियों के निष्पादन में संवृद्धि करने के लिए उनके सहयोग से समय रहते उपचारात्मक उपाय अपनाए जा सकें। **संपूर्ण आकलन के बाद में कक्षा-अध्यापिका द्वारा नकारात्मक आकलन से बचते हुए सकारात्मक और महत्वपूर्ण उपलब्धियों के बारे में विस्तृत टिप्पणी दी जानी चाहिए**

इसका तात्पर्य है –

1. शिक्षार्थियों के साथ अधिगम–लक्ष्यों की साझेदारी
2. स्व–आकलन मे शिक्षार्थियों की भागीदारी
3. प्रतिपुष्टि उपलब्ध कराना जिससे शिक्षार्थियों की पहचान हो सकेगी और अगला कदम उठाने का मार्ग बनेगा।
4. आत्मविश्वासी होते हुए, प्रत्येक शिक्षार्थी सुधार कर सकेगा।

रचनात्मक आकलन क्या है?

आइए, दिए गए कार्य को देखें –

विषय : सामाजिक विज्ञान **कक्षा :** VIII

प्रकरण : स्त्री ,जाति और सुधार

कार्य : नाटकीकरण

प्रक्रिया :

1. शिक्षार्थियों को समूहों में विभाजित किया जाएगा। वे अपने समूहों में विभिन्न समय–अवधि में भारतीय समाजों में प्रचलित सामाजिक बुराई में से किसी एक पर लघु नाटिका तैयार करेंगे।
2. सामाजिक बुराई में शामिल हो सकते हैं – सती प्रथा, बाल विवाह, कन्या भ्रूण हत्या, स्त्रियों को शिक्षा से वंचित रखना और जेंडर विसंगति (लिंग भेदभाव)।
3. प्रत्येक समूह एक लघु नाटिका तैयार करेगा और उसकी प्रस्तुति करेगा। प्रत्येक शिक्षार्थी को कुछ संवाद बोलने के लिए कहा जाएगा।
4. प्रस्तुति के बाद शिक्षार्थी चर्चा करेंगे।

अधिगम–परिणाम – शिक्षार्थी इस योग्य बन सकेंगे कि वे

- विभिन्न समय–अवधियों में भारत में प्रचलित सामाजिक बुराइयों की अंतर्दृष्टि प्राप्त कर सकें।
- सामाजिक बुराइयों पर मनन कर सकेंगे और अपनी भावनाओं को शब्दों में अभिव्यक्त कर सकें।

अभीष्ट समय

- चर्चा और आलेख लिखना : 2 कालांश
- प्रस्तुति : 1 कालांश

कौशल : शिक्षार्थियों में म्निलिखित की योग्यता का विकास करना –

- आलेख लिखना
- संवाद बोलना
- अभिनय
- समूह (टीम) में कार्य करना

आकलन के मानदंड

समूहों के प्रदर्शन का आकलन विषय-वस्तु, संवाद अदायगी और संकल्पना के स्पष्टीकरण के आधार पर किया जाएगा।

अनुवर्तन/प्रतिपुष्टि

कक्षा द्वारा प्रस्तुतियों पर चर्चा की जा सकती है। जहां भी संकल्पना स्पष्ट न हो, वहां शिक्षक शिक्षार्थियों को अपनी टिप्पणी देने के लिए कह सकते हैं। शिक्षक पाठ के किसी भी भाग को दुबारा समझा सकते हैं जो शिक्षार्थियों द्वारा स्पष्ट रूप से न समझे गए हों।

यह रचनात्मक आकलन कार्य है अथवा योगात्मक आकलन कार्य?

इसकी निम्नलिखित विशेषताएँ हैं –

- इसका मुख्य उद्देश्य है – शिक्षार्थियों को विभिन्न समय-अवधियों में भारत में बालिका और स्त्रियों के विरुद्ध सामाजिक बुराइयों की संकल्पना को समझने के योग्य बनाना।
- यह कार्यकलाप स्त्री, जाति और सुधार पर आधारित प्रकरण की शिक्षण-अधिगम-प्रक्रिया का हिस्सा है।
- यह कार्यकलाप शिक्षार्थियों को सामूहिक अंत:क्रिया और प्रस्तुति में शामिल करता है।
- कार्यकलाप समाप्त होने के बाद शिक्षक सुधार के लिए प्रतिपुष्टि देते हैं। यदि आवश्यक हो तो पाठ पर पुनर्विचार भी किया जा सकता है।

- स्पष्ट रूप से परिभाषित मानदंडों के आधार पर आकलन किया जाता है।
- यह कार्यकलाप पाठ के एक भाग के रूप में कक्षा में किया जाता है।
- कार्य का मुख्य उद्देश्य शिक्षार्थियों के ज्ञान का मापन करना नहीं है। कार्य का लक्ष्य है-आनुभविक अधिगम के माध्यम से शिक्षार्थियों को संकल्पनात्मक स्पष्टता उपलब्ध कराना।
- यह अधिगम को और अधिक प्रोत्साहित करता है।

ये विशेषताएँ रचनात्मक आकलन का मूल हैं।

आइए, परीक्षा में दिए गए निम्नलिखित प्रश्नों को देखें –

विभिन्न समय-अवधि में भारतीय समाज में प्रचलित सामाजिक बुराइयां कौन-सी हैं? इन्होंने स्त्रियों और बालिकाओं को किस प्रकार प्रभावित किया है? अपना उत्तर कम से कम 200 शब्दों में लिखिए।

यह एक ठेठ सवाल है जिसे योगात्मक परीक्षण अथवा परीक्षा में दिया गया है। यहां मुख्य उद्देश्य है – परीक्षा में दिए गए पाठ में शिक्षार्थियों के ज्ञान की सीमा का मापन करना। मूल्य-बिंदुओं और अंक-योजना के आधार पर शिक्षार्थियों के उत्तरों को अंक अथवा ग्रेड दिए जाएँगे। शिक्षक द्वारा एकत्र की गई जानकारी को उन समस्याओं के निदान के लिए प्रयोग में नहीं लाया जा सकता जिनका सामना शिक्षार्थियों द्वारा किया गया अथवा उपचार के लिए भी नहीं इस जानकारी का प्रयोग किया जा सकता, क्योंकि परीक्षा का आयोजन प्राय: इकाई अथवा पाठ पूरा करने के बाद किया जाता है।

लेकिन यदि पाठ के दौरान प्रकरण पर आधारित लघु प्रश्नोत्तरी अथवा परीक्षा का आयोजन किया जाता है, यह जांचने अथवा सुनिश्चित करने के लिए कि सीखने में कौन-सी रिक्तियां रह गई हैं और जिसका उद्देश्य शिक्षार्थियों की मदद करना है तो यह अपनी प्रकृति में रचनात्मक होगा। अत: एक प्रकार से उपकरण का जिस प्रकार से प्रयोग किया गया है, जैसे – सीखने को संवर्धित करने के लिए, सीखने की मात्रा को सुनिश्चित करने अथवा मापने के लिए, यह निर्णय करने के लिए कि यह रचनात्मक आकलन के लिए है या योगात्मक आकलन के लिए ।

क्या नहीं है रचनात्मक आकलन ?

यह देखा गया है कि सतत मूल्यांकन के नाम पर विद्यालय 'परीक्षाओं' की एक शृंखला का आयोजन करते हैं। ये परीक्षाएँ शैक्षणिक सत्र के लगभग सप्ताह के हर दिन अथवा लगभग हर महीने आयोजित की जाती हैं। इसके बारे में यह तर्क दिया जाता है कि केवल निरंतर परीक्षाओं के आयोजन के द्वारा ही सतत आकलन सुनिश्चित

किया जा सकता है। लेकिन इस प्रकार की परीक्षाओं को रचनात्मक आकलन नहीं कहा जा सकता, क्योंकि ये शिक्षण-अधिगम-प्रक्रिया के साथ एकीकृत नहीं हैं। ना ही इस प्रकार की परीक्षाओं से शिक्षक द्वारा एकत्रित जानकारी को शिक्षण-अधिगम-प्रक्रिया को संवर्धित करने के लिए प्रभावी और व्यवस्थित तरीके से उपयोग में लाया जा सकता है।

केस अध्ययन

कक्षा IX के शिक्षार्थियों को विज्ञान में निम्नलिखित परियोजना कार्य दिया गया –

संचारी रोगों पर आधारित परियोजना कार्य

- पुस्तकों और शोध पत्रिकाओं (जरनल्स) का अध्ययन कर और इंटरनेट पर सर्फिंग कर संचारी रोगों के बारे में जानकारी एकत्र कीजिए।
- चित्रांकन, पिक्चरर्स और फोटोग्राफ्स के साथ जानकारी को एक फोल्डर में प्रस्तुत कीजिए।
- फोल्डर्स 15 दिनों में मूल्यांकन के लिए जमा कर दिए जाने चाहिए।

निम्नलिखित मानदंडों के आधार पर फोल्डर्स का मूल्यांकन किया जाएगा –

विषय-वस्तु, प्रस्तुति और चित्रांकन की सफाई।

शिक्षार्थी व्यक्तिगत रूप से कार्यकलाप पूरा करके तय अवधि तक फोल्डर्स जमा कर देते हैं। शिक्षिका आकलन मानदंड के अनुसार शिक्षार्थियों के कार्य को ग्रेड देती है।

प्रश्न :

- क्या यह एक अच्छा रचनात्मक कार्यकलाप है?
- इस कार्यकलाप को करने में शिक्षार्थियों को शिक्षक और सहपाठी-समूह की मदद किस प्रकार मिलती है।
- इस परियोजना कार्य के क्या उद्देश्य हैं?
  - जानकारी एकत्र करने और उन्हें प्रस्तुत संबंधी शिक्षार्थियों की योग्यता का आकलन करना?

    अथवा

  - शिक्षार्थियों को अपने अधिगम को गहनता प्रदान करने योग्य बनाना।

यदि परियोजना का उद्देश्य शिक्षार्थियों की इस रूप में मदद करना है कि वे प्रकरण की गहन समझ अर्जित कर सकें तब परियोजना को भिन्न तरीके से संरचित करना चाहिए

- शिक्षक को शिक्षार्थियों के साथ परियोजना के बारे में चर्चा करनी चाहिए।
- वे उन तरीकों की खोज करेंगे कि जिनसे जानकारी को एकत्र किया जा सकता है, समझा जा सकता है और उसमें आवश्यकतानुसार परिवर्तन किया जा सकता है।
- समूह कार्य के लिए अवसर उपलब्ध कराना जिससे शिक्षार्थी सहयोगात्मक रूप से प्रकरण का अध्ययन कर सकें और एक-दूसरे की मदद एवं सहयोग कर सकें।
- शिक्षक नियमित अंतरालों पर संपूर्ण प्रक्रिया की निगरानी करता है, सुधार, संशोधन और परिमार्जन के लिए प्रतिपुष्टि देता है।
- फोल्डर जमा कराने के अतिरिक्त शिक्षार्थियों को कक्षा के समक्ष प्रस्तुति अथवा मौखिक परीक्षा देने की आवश्यकता होगी।
- सहपाठी-आकलन में शिक्षार्थियों को शामिल करते हुए आकलन किया जाता है।
- शिक्षक और शिक्षार्थियों द्वारा एकत्र की गई जानकारी आगे शिक्षण-अधिगम-प्रक्रिया में और अधिक सुधार करने के लिए उपयोग लाया जाता है।

इस प्रकार की परियोजनाओं और दत्त कार्यों से संबंधित एक मुख्य मुद्दा यह है कि शिक्षक के पास यह सुनिश्चित करने की गुंजाइश बहुत कम होती है कि ये कार्य स्वयं शिक्षार्थियों द्वारा किए गए हैं। अब यह एक सामान्य बात है कि परियोजनाओं और दत्त कार्यों को दुकानों से 'खरीदा' भी जा सकता है। अभिभावकों द्वारा परियोजना कार्य किए जाने के उदाहरण भी अब सामान्य हैं। इसके अलावा इंटरनेट से जानकारी डाउनलोड करने से भी अधिगम बहुत कम होता है।

अत: रचनात्मक आकलन के प्रभावी उपकरण के रूप में परियेजना कार्य और दत्त कार्य का प्रयोग करने के लिए शिक्षक कुछ सावधानियां बरतें -

- शिक्षक के प्रत्यक्ष पर्यवेक्षण में शिक्षार्थी विद्यालय में ही कार्य को पूरा करें।
- शिक्षार्थियों के साथ परियोजना कार्य पर चर्चा करें और प्रत्येक चरण पर उनकी प्रगति की निगरानी करें।
- स्व और सहपाठी-आकलन के माध्यम से उन्हें आकलन-प्रक्रिया में शामिल करें।

- अनुदेशनात्मक रणनीति के रूप में वर्णनात्मक प्रतिपुष्टि दें जिससे शिक्षार्थी अपने अधिगम में और उन्नति कर सकें।
- कार्य और अपने अनुभवों के साथ अपने कक्षागत अधिगम को जोड़ने में शिक्षार्थियों की मदद करना।
- कार्यकलापों के साथ अनुवर्तन करना, जैसे – कुछ संकल्पनाओं पर दुबारा चर्चा करना, व्याख्या करना आदि।

इस संदर्शिका में क्या है?

सत्र 2009–10 में कक्षा IX में के.मा.शि.बो. से मान्यता प्राप्त विद्यालयों में सतत और समग्र आकलन की शुरुआत करने के बाद बोर्ड ने यह अनुभव किया कि यह ज़रूरी है कि सभी हितधारियों (स्टेकहोल्डर्स), विशेषत: शिक्षकों को सतत और समग्र आकलन की एक समग्र तस्वीर उपलब्ध कराई जाए। अत: सतत और समग्र आकलन – कक्षा IX और X की शिक्षक संदर्शिका लाई गई। सीसीई योजना के बारे में विस्तृत जानकारी देने के अतिरिक्त शैक्षिक और सह–शैक्षिक क्षेत्रों में आकलन के आधारभूत तत्वों, आकलन के विद्यालय–आधारित आकलन के आयाम और रचनात्मक एवं योगात्मक प्रयोजनों के लिए मूल्यांकन के उपकरण और तकनीकों को भी इस संदर्शिका में शामिल किया गया है। रचनात्मक और योगात्मक आकलन के लिए भारांक का सत्रानुसार आबंटन को भी इसमें शामिल किया गया है।

इस प्रकाशन के अनुक्रम में बोर्ड ने कक्षा IX और X के लिए भाषाओं, गणित, विज्ञान और सामाजिक विज्ञान में रचनात्मक आकलन पर उदाहरणपरक और व्याख्यात्मक सामग्री उपलब्ध कराने के लिए संदर्शिका की एक श्रृंखला निकालने का निर्णय लिया। बोर्ड ने इसके प्रकाशन के बाद से हितधारियों (स्टेकहोल्डर्स) से रचनात्मक आकलन संदर्शिकाओं पर अनेक टिप्पणियां और सुझाव प्राप्त किए और इसलिए उन्हें संशोधित करने का निर्णय लिया। बोर्ड से मान्यता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों से प्रत्येक कार्यकलाप/कार्य पर व्यापक प्रतिपुष्टि प्राप्त की गई और उसके प्रकाश में संशोधित संस्करण आया।

हमारा लक्ष्य है – इस संदर्शिका के माध्यम से रचनात्मक आकलन को सुदृढ़ करना और शिक्षकों को रचनात्मक आकलन के लिए विस्तृत दिशा–निर्देश एवं सहायक सामग्री उपलब्ध कराना।

रचनात्मक आकलन पर शिक्षक संदर्शिका के उद्देश्य

1. सतत और व्यापक आकलन की व्यापक रूपरेखा में रचनात्मक आकलन की संकल्पना को स्पष्ट करना।

2. निर्धारित सामग्री और कक्षा-पद्धतियों के साथ रचनात्मक आकलनों (एफए 1, एफए 2, एफए 3, और एफए 4) को एकीकृत करना।
3. शिक्षण-अधिगम-पक्रिया में संवर्धन के लिए रचनात्मक आकलन का उपयोग करने के लिए शिक्षकों और शिक्षार्थियों की मदद करना।
4. कक्षा IX और X के लिए भाषाओं, गणित, विज्ञान और सामाजिक विज्ञान में इकाई/पाठ के लिए रचनात्मक आकलन के कार्यकलापों के समृद्ध स्रोत उलब्ध कराना।
5. संदर्शिका में दिए गए रचनात्मक आकलन संबंधी कार्यों का उपयोग करने में शिक्षकों की मदद करना जिससे वे स्वयं अन्य कार्यों का निर्माण कर सकें।
6. रचनात्मक और योगात्मक आकलन संबंधी संकल्पना का स्पष्टीकरण प्राप्त करने में शिक्षकों की मदद करना।
7. सामग्री और पद्धतियों को बेहतर बनाने के लिए शिक्षकों को क्षमता-वृद्धि के लिए प्रेरित करना।
8. प्रभावी समय-प्रबंधन में शिक्षकों की मदद करना।
9. रचनात्मक और योगात्मक आकलन को व्यवस्थित ढंग से अभिलेखन (रिकॉर्ड) के लिए विद्यालयों को आवश्यक दिशा-निर्देश उपलब्ध कराना।
10. आकलन के साथ-साथ परामर्श और संवर्धन के लिए शिक्षकों के विकास हेतु अवसर उपलब्ध कराना।
11. विभिन्न हितधारकों के बीच सतत और समग्र आकलन तथा इस योजना में रचनात्मक आकलन के स्थान पर स्वस्थ एवं सार्थक अंत:क्रिया आरंभ करना।
12. शिक्षकों और शिक्षार्थियों - दोनों के लिए शिक्षण-अधिगम-प्रक्रिया को आनंददायक बनाना।

इस संदर्शिका का उपयोग कैसे करें?

जैसा कि पहले स्पष्ट किया गया है कि इस संदर्शिका में सभी मुख्य शैक्षिक विषयों में कक्षा IX और X के लिए रचनात्मक आकलन के अनेक कार्यकलाप शामिल हैं। शिक्षक न केवल अधिगम का आकलन करने के लिए बल्कि स्वयं अपने शिक्षण की प्रभावशीलता को बढ़ाने के लिए भी योजनाबद्ध तरीके से इनका उपयोग कर सकते हैं। रचनात्मक कार्यों के प्रभावी प्रयोग के लिए नीचे कुछ सुझाव दिए गए हैं -

क. योजना

शैक्षिक सत्र के प्रारंभ में एक ही विषय के शिक्षक आपस में विचार-विमर्श कर सकते हैं और पूरे सत्र के लिए रचनात्मक आकलन की योजना बना सकते हैं। इस संदर्शिका में प्रत्येक विषय के लिए सुझाव के तौर पर वार्षिक योजना दी गई है। प्रत्येक विद्यालय द्वारा बनाई गई वार्षिक योजना में निम्नलिखित विवरण होने चाहिए –

- एफए 1, एफए 2, एफए 3 और एफए 4 के लिए कितने रचनात्मक कार्यों का प्रयोग किया जाएगा? (कार्यों की संख्या सुझाई गई न्यूनतम संख्या से कम नहीं होनी चाहिए)
- संदर्शिका में से निर्धारित कार्य (शिक्षक संदर्शिका में दिए गए कार्यों के अतिरिक्त स्वयं अपने कार्यों को जोड़ने के लिए स्वतंत्र हैं।)
- कार्यों को निर्धारित/चुनते समय वैविध्यपूर्ण चयन की सावधानी बरतनी चाहिए जिससे ज्ञान और कौशलों को व्यापक रूप से शामिल किया जा सके तथा इसमें एकरसता की स्थिति न हो। उदाहरण के लिए, भाषाओं में पढ़ने, लिखने, बोलने और सुनने जैसे विभिन्न कौशलों एवं भाषा-क्षेत्र, जैसे-साहित्य तथा व्याकरण को रचनात्मक आकलन में शामिल किया जाना चाहिए इस योजना में चार रचनात्मक कार्यों में कार्यों को इस प्रकार बांटा जाना चाहिए कि इन सभी पक्षों का आकलन सत्र के दौरान कम से कम दो या तीन बार किया जा सके। इसी प्रकार अन्य विषयों में भी कार्यों का चयन इस प्रकार किया जाना चाहिए जिससे वे आकलन के विविध माध्यमों का प्रयोग करते हुए विभिन्न कौशलों और दक्षताओं का आकलन कर सकें।

ख. कक्षाकक्षीय रणनीतियां

चूंकि कार्यों को कक्षागत अनुदेशों के साथ एकीकृत किया जाना है, अत: शिक्षकों को अपनी पाठ-योजना में उन्हें अंत:स्थापित करना होगा। संदर्शिका में दी गई कार्य-विशिष्टियों का प्रयोग शिक्षकों द्वारा निम्नलिखित रूप में किया जा सकता है –

अधिगम-परिणाम – ये प्रत्येक कार्य के लिए अधिगम-परिणामों को निर्दिष्ट करते हैं और इस प्रकार ये ध्यानकेंद्रित करने में शिक्षकों और शिक्षार्थियों की मदद करते हैं।

आकलन करने समय इन्हें ध्यान में रखना ज़रूरी है।

अभीष्ट समय – शिक्षक के लिए यह जानना ज़रूरी है कि एक कार्य को पूराकरने में कितने समय की

आवश्यकता है, क्योंकि यह योजना बनाने और एक क्षण व्यर्थ किए बिना कार्य की क्रियान्विति में मदद करता है।

प्रक्रिया – प्रदत्त कार्य के लिए शिक्षक को भी कुछ तैयारी की आवश्यकता हो सकती है। इन्हें 'प्रक्रिया' के अंतर्गत शामिल किया गया है। इस शीर्षक के अंतर्गत लिए जाने वाले विभिन्न चरणों, बरती जाने वाली सावधानियों और जानकारी एकत्र करने के लिए सुझावों को भी उपलब्ध कराना गया है।

आकलन के मानदंड

आकलन को वस्तुनिष्ठ और व्यवस्थित बनाने के लिए प्रत्येक कार्य के लिए प्रस्तावित अंकों के साथ विशिष्ट मानदंड उपलब्ध कराए गए हैं। यह अनिवार्य है कि शिक्षक कार्य शुरू करने से पहले इन मानदंडों को प्रस्तुत करे अथवा कक्षा में पढ़कर सुनाए। शिक्षार्थियों को यह जानना चाहिए कि किन आधारों पर उनका आकलन किया जाएगा। इससे उन्हें कार्य की स्पष्टता भी होगी। शिक्षार्थियों द्वारा प्रत्येक कार्य में प्राप्त किए गए अंकों का अभिलेखन (रिकॉर्ड)किया जाना चाहिए आकलन-अभिलेख (रिकॉर्ड) का रख-रखाव भी होना चाहिए जब भी लिखित सामग्री तैयार होती है तो उसे शिक्षार्थी के पोर्टफोलियो का हिस्सा बनाया जा सकता है।

प्रतिपुष्टि/अनुवर्तन

यह रचनात्मक आकलन का महत्वपूर्ण चरण है। शिक्षार्थियों का निष्पादन उनकी समझ, संकल्पनात्मक स्पष्टता, समस्याओं और अधिगम-रिक्तियों(गैप्स) के बारे में मूल्यवान जानकारी देता है। इस जानकारी के आधार पर शिक्षक प्रतिपुष्टि दे सकते हैं और उपचार एवं संवर्धन के लिए अनुवर्ती कार्यकलाप आयोजित कर सकते हैं। यह जानकारी शिक्षकों को इस रूप में समर्थ भी बनाएगी कि वे सीखने की प्रभावशीलता को बढ़ाने के लिए अपने शिक्षण-अभ्यासों में संशोधन कर सकें।

ग. कुछ चुनौतियां

शिक्षकों के समक्ष रचनात्मक आकलन को अपने शिक्षण में समेकित करने में कुछ चुनौतियां आ सकती हैं। ये चुनौतियां इनके कारण हो सकती हैं –

- कक्षा में शिक्षार्थियों की अधिक संख्या
- समय की कमी

- प्रचालन-तंत्र (लोजिस्टिक्स) के कारण बाधाएँ
- समूह/जोड़ों में कार्य का आकलन करने की रणनीतियां

समुचित योजना की सहायता से इन चुनौतियों का सामना किया जा सकता है। नीचे कुछ सुझाव दिए गए हैं-

- ऐसे कार्य चुनें जिसमें समूह में और जोड़ों में कार्य करना शामिल हो।
- ऐसे कार्य जिनमें शिक्षार्थियों की ओर से लिखित उत्तर की आवश्यकता है, उनका आकलन सहपाठियों द्वारा किया जा सकता है।
- बहुविकल्पी और अन्य वस्तुनिष्ठ प्रकार वाले प्रश्नों के उत्तरों को शिक्षार्थियों द्वारा परस्पर कार्य-पत्रकों का आदान-प्रदान करते हुए स्वयं जांचा जा सकता है और शिक्षक सही उत्तर बताएँगे।
- एक कालांश में सभी शिक्षार्थियों का आकलन करने की आवश्यकता नहीं है। इसका अर्थ यह है कि कार्य को शिक्षार्थियों के समूहों में बांटा जा सकता है जिससे शिक्षक विभिन्न कालांशों में उनका आकलन कर सकेंगे। इसका एक निहितार्थ यह है कि बड़ी संख्या वाली कक्षाओं में सभी कार्यों में सभी शिक्षार्थियों का आकलन करना ज़रूरी नहीं है। कार्यों की ध्यानपूर्वक बनाई गई योजना से शिक्षार्थियों के समूहों में बारी-बारी से कार्यों को बांटते हुए सभी कौशलों को शामिल किया जा सकता है।
- इससे पता लगता है कि एक समय में समान कार्य में सभी शिक्षार्थियों को शामिल नहीं किया जाना चाहिए बहुबुद्धि की आवश्यकता को पूरा करने के लिए शिक्षक शिक्षार्थियों को दिए जाने वाले कार्यों के प्रति लचीले उपागम को अपना सकते हैं। उदाहरण के लिए, जो शिक्षार्थी लिखित कार्य में बेहतर हैं उन्हें उन शिक्षार्थियों से अलग कार्य दिया जा सकता है जो व्यावहारिक कार्यों में बेहतर हैं।
- समय-सारिणी बनाते समय प्रत्येक विषय में दो कालांशों को एक साथ भी दिया जा सकता है। इन कालांशों में ऐसे कार्य करवाए जा सकते हैं जिनमें वाद-विवाद, प्रस्तुतीकरण, समूह-चर्चा, नाटकीकरण, भूमिका-निर्वाह (रोल प्ले) आदि शामिल हों।

समय-प्रबंधन

चूंकि प्रत्येक विषय के लिए कालांशों की संख्या पूर्व निर्धारित होती है, अत: शिक्षकों को ऐसा महसूस हो सकता है कि आबंटित कालांशों में रचनात्मक आकलन-कार्यों को आयोजित करना कठिन हो सकता है। फिर भी यह ध्यान में रखा जाना चाहिए कि रचनात्मक आकलन शिक्षण-अधिगम-प्रक्रिया में ही निर्मित

किया जाए और यह केवल पाठ्यचर्या–संपादन के लिए अपनाई गई पद्धति में बदलाव को प्रदर्शित करता है। व्ययख्याओं और शिक्षक–केंद्रित शिक्षण को कम करते हुए कार्यों और कार्यकलापों के लिए पर्याप्त समय निकाला जा सकता है। कुछ अन्य सुझाव इस प्रकार हैं –

- उचित योजना से दक्ष समय–प्रबंधन किया जा सकेगा।
- कक्षा आरंभ करने से पहले प्रत्येक कार्य के लिए तैयारी पहले ही पूरी कर ली जाए जिससे समय व्यर्थ ना हो।
- स्व और सहपाठी–आकलन का युक्तिसंगत रूप से प्रयोग करें।
- सत्र के शुरुआती भाग में शिक्षार्थियों को एक–दूसरे और शिक्षक के साथ सहयोग करने के लिए प्रशिक्षित करें। कुछ समय बाद वे दक्षता और तेज़ गति को बनाए रख सकेंगे।
- यह अनिवार्य है कि शैक्षणिक सत्र की शुरुआत में ही शिक्षार्थियों के नाम के साथ अंक पत्र वार्षिक योजना के अनुसार तैयार कर लिए जाएँ। प्रत्येक आकलन के लिए चुने गए एफए 1, एफए 2, एफए 3 और एफए 4 के लिए कार्यों के विवरण सा कॉलम में दिए जाएँ और अधिकतम अंक लिखे जाएँ जिससे अंकों को दर्ज़ करने में बहुत अधिक समय ना लगे।
- शिक्षार्थियों को अपने पोर्टफोलियो बनाने के लिए प्रशिक्षित करें। प्रत्येक विषय के लिए एक फोल्डर बनाया जा सकता है जिसमें प्रत्येक शिक्षार्थी द्वारा अपने सर्वश्रेष्ठ लिखित कार्य को रखा जा सकता है। जब रिकॉर्ड रखने की ज़िम्मेदारी उठाने में शिक्षार्थियों को मदद मिलती है तो वे बेहतर समय–प्रबंधन के अलावा शिक्षक का कुछ भार भी कम कर सकते हैं।

प्रचालन-तंत्र (लोजिस्टिक्स)

सभी विद्यालयों में कार्य–पत्रकों की फोटोकॉपी करना संभव न हो। शिक्षकों को इस समस्या से उबरने के लिए कुछ रणनीतियों को अपनाना होगा।

सुझाव

- केवल विस्तृत कार्य–पत्रक और वे कार्य–पत्रक जिनमें आरेख और चित्र हैं, उन्हीं की फोटोकॉपी करवाने की ज़रूरत होती है। जब भी संभव हो, कार्य–पत्रक को ब्लैकबोर्ड पर लगाया जा सकता है। यदि तकनीक उपलब्ध है तो कार्य–पत्रक को एलसीडी की सहायता से प्रदर्शित किया जा सकता है।

- बहुविकल्पी और वस्तुनिष्ठ प्रश्नों को पढ़ा जा सकता है और शिक्षार्थियों को पेपर पर केवल उत्तर लिखने का निर्देश दिया जा सकता है।
- जोड़ों में कार्य करने, समूह-कार्य और पूरी कक्षा द्वारा कार्य करने के लिए निर्देशों को एक या दो बार पढ़ा जा सकता है।
- अग्रिम रूप में ही फोटोकॉपी की आवश्यकताओं को प्राचार्य और विद्यालय-प्रशासन को बता दें जिससे विद्यालय समुचित प्रबंध कर सके।
- फोटोकॉपी के लिए हमेशा कागज़ के दोनों तरफ का प्रयोग करें। इसका अर्थ है कि एक कागज़ पर एक से अधिक कार्य फोटोकॉपी होगी। जब शिक्षार्थी एक कार्य को पूरा कर लें तब इन कार्य-पत्रकों को ले लिया जाए और दूसरे कार्य के लिए दुबारा से कार्य-पत्रक बांट दिए जाएँ।
- जब भी संभव हो, एक कार्य-पत्रक को दो शिक्षार्थियों द्वारा बांटा जा सकता है।
- शिक्षार्थियों को कागज़/कार्य-पत्रक को किफायत से बरतने के लिए प्रशिक्षित करें।

घ. समूह/जोड़ों में कार्य करने के आकलन की रणनीतियां

प्रारंभ में शिक्षकों के लिए समूह/जोड़ों में कार्यों का आकलन करना कुछ कठिन हो सकता है, क्योंकि इसका परिणाम एक से अधिक शिक्षार्थियों को मिलता है। इस संबंध में शिक्षकों की मदद करने के लिए नीचे कुछ सुझाव दिए गए हैं-

- जब भी संभव हो, समूह-कार्य और जोड़े में किए जाने वाले कार्यों को छोटे भागों में बांट सकते हैं और समूह के प्रत्येक सदस्य को एक भाग पर कार्य करने के लिए कहा जा सकता है।
- जहां उपयुक्त तरीका संभव न हो, वहां समूह के प्रत्येक सदस्य के योगदान का अवलोकन और निगरानी की जाए।
- अकसर समूह-चर्चा के बाद प्रत्येक समूह द्वारा प्रस्तुति की जाए यह ध्यान रखा जाए कि प्रस्तुतीकरण की ज़िम्मेदारी बारी-बारी से सभी शिक्षार्थियों के पास आए जिससे एक समय के बाद सभी को अपने समूह के विचार प्रस्तुत करने का अवसर मिल सके।
- सामूहिक कार्य का आकलन पूरे समूह/जोड़ों के लिए किया जा सकता है। इसका अर्थ यह है कि समूह के प्रत्येक सदस्य को समान अंक या ग्रेड मिलेंगे। जबकि जोड़ों में करने वाले कार्यों में व्यक्तिगत निष्पादन का आकलन करना आसान होता है।

- चूंकि रचनात्मक कार्य अनौपचारिक होता है अतः समूह-कार्य का आकलन व्यापक मानदंडों पर किया जा सकता है, जैसे – भागीदारिता, योगदान और समूह के प्रत्येक सदस्य की प्रभावशीलता।
- यह आवश्यक है कि शिक्षक समूह-कार्य की निगरानी समुचित रूप से करें जिससे यह सुनिश्चित किया जा सके कि प्रत्येक शिक्षार्थी कार्य में हिस्सा ले रहा है और कोई शिक्षार्थी अपना प्रभुत्व नहीं बना रहा।

निष्कर्ष

इस संदर्शिका में शिक्षक की तैयारी, योजना और समन्वय पर बल दिया गया है। यह सुझाव दिया जाता है कि वार्षिक योजना बनाते समय प्राचार्य प्रत्येक विषय-समिति से बातचीत करें और कार्य-योजना बनाने में शिक्षकों की मदद करें ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि आकलन को शिक्षण-अधिगम-प्रक्रिया में एकीकृत किया गया है।

यह भी अनिवार्य हो सकता है कि पहले और दूसरे सत्रों के अतिरिक्त प्रत्येक इकाई/पाठ के लिए विस्तृत पाठ-योजनाओं को तैयार किया जाए जबकि पाठ-योजना प्रत्येक शिक्षक द्वारा विकसित नवाचारी उपकरण के रूप में हो जो पढ़ाई जाने वाली संकल्पनाओं, शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं और अन्य समाज-सांस्कृतिक कारकों पर आधारित होगी। शायद यह उपयुक्त होगा कि पाठ-योजना में सतत और समग्र आकलन को समेकित करने के लिए इसमें कुछ व्यापक क्षेत्रों को शामिल किया जाए पाठ-योजना के प्रारूप के साथ इन व्यापक क्षेत्रों का निर्धारण प्रत्येक विद्यालय द्वारा किया जा सकता है, समग्र योजना को सुनिश्चित करने के लिए निम्नलिखित तत्वों को शामिल किया जा सकता है-

- विषय-वस्तु/प्रकरण/पाठ
- संकल्पनाएँ/कौशल
- स्तर- प्रवेश, प्रक्रिया, समेकन, बहिर्गमन
- उपचार

यह भी सुझाव दिया गया है कि रचनात्मक कार्य का आकलन दस अंकों या दस के गुणकों में किया जा सकता है जिससे भारोक की गणना में आसानी हो सके। इसी प्रकार सूचना और संचार तकनीक (आईसीटी) को समेकित करते हुए तथा शिक्षार्थी स्व-अभिगम्य उपकरणों के विकास के माध्यम से शिक्षार्थियों द्वारा स्व-आकलन को भी बढ़ावा दिया जाना चाहिए इससे शिक्षार्थियों को स्वायत्ता के भरपूर अवसर मिलेंगे और

शिक्षकों का भार भी कम होगा। अंत में परियोजनाओं के बारे में कुछ बातें। यह दस्तावेज़ यह बताता है कि जहां तक संभव हो परियोजनाओं को विद्यालय में ही किया जाना चाहिए लेकिन कुछ परियोजनाएँ ऐसी होती हैं जिनमें गहन शोध और स्वयं कार्य करने तथा विभिन्न सामग्रियों का प्रयोग करने की आवश्यकता होती है जिन्हें विद्यालयी समय में पूरा करना कठिन होता है। चूंकि यहां मुख्य सरोकार शिक्षार्थियों द्वारा आकलन के लिए जमा किए गए कार्य की वास्तविकता और साख है। यदि शिक्षक द्वारा परियोजना-कार्य की निगरानी में पर्याप्त सावधानी बरती जाए जो परियोजना कार्य का कुछ भाग विद्यालय से बाहर करने के लिए शिक्षार्थियों को अनुमति दी जा सकती है। इस संदर्शिका में इस विषय से संबंधित बरती जाने वाली सावधानियों के बारे में विस्तृत दिशा-निर्देश दिए गए हैं। परियोजनाओं को यथार्थवादी और सरल बनाते हुए शिक्षक शिक्षार्थियों के कार्य की प्रामाणिकता को सुनिश्चित कर सकते हैं।